शोध मंथन, 2017 ISSN: (P): 0976-5255, (e) : 2454-339X, Impact Factor 3.8942 (ICRJIFR)
UGC Aproved Journal No. 40908

शब्दों का विकास एवं ध्वनि

डा० निकेता
एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
सनातन धर्म महाविद्यालय, मुजफ्फरनगर

सारांश

*वैदिक काल से लेकर आज तक अनेक संस्कृतियाँ एवं भाषाएँ भारत में आयी और अपने समन्वय के गुण के कारण भारत ने उनको अपने में आत्मसात् कर लिया। परिणामस्वरूप अंग्रेजी, अरबी, फारसी, तुर्की, पुर्तगाली अनेक विदेशी भाषाओं के शब्द हमारी हिन्दी भाषा में एकमेक को गये हैं। हिन्दी में अनेक ऐसे शब्द प्रयुक्त हो रहे हैं, जो उच्चारण, वर्ण–विन्यास एवं ध्वनि में साम्य रखते हुए भी भिन्नार्थक है, जिसका कारण उन शब्दों के मूल का भिन्न होना है। उदाहरणार्थ– **'आम'** सौ रूपये किलो हैं, जिसे खरीदना **आम** आदमी के लिए मुश्किल है।' इन दोनों **'आम'** शब्दों में ध्वनि की समानता होने पर भी अर्थ की भिन्नता है, क्योंकि प्रथम **'आम'** शब्द का विकास सं०. भाषा के 'आम्र' शब्द से हुआ है, तो द्वितीय **'आम'** शब्द का सम्बन्ध अरबी भाषा से है।*

शोध पत्र का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है:

डा० निकेता,

''शब्दों का विकास एवं ध्वनि''

शोध मंथन,
सितम्बर 2017,
पेज सं0 193–198
http://anubooks.com/?page_id=581
Artcile No. 27

डा० निकेता

शब्दों की भी अपनी एक अलग ही कहानी है। शब्द एक ही स्थान पर आसन लगाकर नहीं बैठते। सदैव भ्रमण करते रहते हैं। एक ही शब्द विविध परिवर्तनों से गुजरता हुआ अनेक देशों का भ्रमण करता हुआ सर्वत्र प्रसारित हो जाता है, इसी से एक ही शब्द नाना भाषाओं में नाना रूपों में दिखाई पडता है। यथा सं०. का मातृ ईरान में मादर, इंग्लैण्ड में मदर (MOTHER) हो गया है। सं०. का भ्रातृ फारसी में बिरादर, ग्रीक में PHRATER, लैटिन में FRUTER, जर्मन में BRUTHER, अंग्रेजी में BROTHER और हिन्दी में भाई है। संस्कृत का 'काक', अंग्रेजी में CROW और हिन्दी में **काग** या **कौआ** कहलाता है –

'**काग** के भाग बड़े, सजनी हरि–हाथ सों लै गयौ माखन–रोटी।'

(रसखान)

'चमचा' शब्द की यात्रा भी बडी रोचक है। ''वैदिक भाषा का **'चमस'** शब्द (ब्रह्मसूत्र, अध्याय 1/पाद 4) ऐसा ही है। आंगिरस के पुत्र बादरायण (ई0पू0 400 वर्ष) ने ब्रह्मसूत्र के प्रथम अध्याय के चतुर्थपाद में 'चमसाधिकरणम्' में ब्रह्म–व्याख्या प्रस्तुत की है। ब्रह्मसूत्र का 'चमस' ही फारसी में चमचा हुआ और फिर हिन्दी में आया। वैदिक **चमस =** हत्थेदार लकड़ी का एक बर्तन जो तीन अंगुल गहरा तथा चौकोर होता है और यज्ञ में काम आता है। वही 'चमस' हिन्दी का चमचा है। आज तो लक्षणा ने 'चमचा' का अर्थ चापलूस, पिछलग्गू आदि बना दिया है।''[1]

कालयात्रा करते–करते शब्दों का रूप परिवर्तित हो जाता है, जिससे उसकी शक्ल–सूरत अनचीन्ही हो जाती है। **'ओना मासी धम, बाप पढ़े न हम'** में यह 'ओना मासी धम' क्या है? यह 'ओना मासी धम' शाकटायन के प्रथम सूत्र 'ऊँ नमः सिद्धम्' का परिवर्तित रूप है। ध्वनिविज्ञान का सम्यक् ज्ञान होने पर ही ध्वनिपरिवर्तन के कारण आमूलतः परिवर्तित शब्दों के मूल स्वरूप को जाना जा सकता है। उदाहरणार्थ अंग्रेजी का **'बाई'** या **'बाई–बाई'** शब्द ऐसा ही है। जब कोई अपना आत्मीय व्यक्ति हमसे दूर जाता है तब उसे 'बाई' या 'बाई–बाई' या 'गुडबाई' कहते है। ''वस्तुतः यह 'गुड' अच्छा का पर्याय 'गुड' न होकर 'गाड' अर्थात् 'ईश्वर' का द्योतक 'गुड' है। इसका इतिहास बहुत विचित्र है पहले जब लोग अपनों से अलग होते थे तो कहा जाता था 'गाड बी विद यू' अर्थात् 'भगवान तुम्हारे साथ हो' यानी 'भगवान तुम्हारी रक्षा करे'। यह वही है जो उर्दू में 'खुदा हाफिज' है जिसका अर्थ है 'खुदा तुम्हारी हिफाजत करे'। हिन्दी की भी लोकोक्ति है : जाको राखे साइयाँ, मार सकै ना कोय। आगे चलकर अंग्रेजी "God be with you" के चारों शब्द मिलकर तथा सिमटकर 'गुडबाई' (Goodbye) बन गये। यह 'गुडबाई' ही संक्षेप में आज 'बाई' रूप में प्रचलित है। इस तरह आज का 'बाई' या 'बाई–बाई' या 'गुडबाई' मूलतः 'गाड बी विद यू' है जो इस धार्मिक विश्वास पर आधारित है कि भवान ही सबकी रक्षा करता है। समय पर आधारित अभिवादनों (यथा – गुडमार्निंग, गुड डे, गुड नून, गुड आफ्टरनून, गुड इवनिंग, गुड नाइट) में भी जो 'गुड' है, मूलतः वह 'गुडबाई' का ही 'गुड' अर्थात् 'गाड' या 'ईश्वर' है।''[2]

समान ध्वनि वाले भिन्नार्थक शब्द

एक ही भाषा के भीतर भिन्न–भिन्न शब्द एक ही रूप ग्रहण कर लेते हैं। ऐसे शब्द भिन्नार्थक कहलाते हैं। भिन्नार्थक शब्दों में ध्वनि की पूर्ण एकता दृष्टिगोचर होती है, किन्तु उन

शब्दों के मूल सर्वथा भिन्न होते हैं। व्युत्पत्ति ही एकोच्चारण विभिन्नार्थक शब्दों की प्रकृति और प्रत्यय की विभिन्नता का दर्शन करा विभिन्न अर्थों को बोधगम्य कराती है।[3] हम शब्द के इतिहास को जानने की इच्छा से उन मूलांशों का पता लगाते हैं जिनसे जुड़कर वह शब्द निर्मित हुआ है, साथ ही उसका प्राचीन स्वरूप उसी भाषा में या किसी दूसरी भाषा में कैसा–कैसा रहा है।[4] उदाहरणार्थ 'ज्+आ+म्+अ' चार ध्वनियों वाले **'जाम'** शब्द पृथक्–पृथक् भाषाओं में पृथक्–पृथक् अर्थ रखते हैं। इसका कारण उनका अलग–अलग भाषाओं की कोख से जन्म लेना है। 'सड़क पर **जाम** लगा हुआ था, इसलिए आने में देर हो गयी।' इस वाक्य में प्रयुक्त **जाम** शब्द तथा निम्न दो शेरो में प्रयुक्त 'जाम' शब्द ध्वनि की एकरूपता रखते हुए भी भिन्नार्थक हैं।

''जिन्दगी एक आंसुओं का **जाम** था।
पी गये कुछ और कुछ छलका गये।''

———————

''जो **जाम** छू दिया हो किसी बेशर ने
उस **जाम** से शराब छलकती जरूर है।''

उपर्युक्त वाक्य में प्रयुक्त **जाम** शब्द का अर्थ 'अवरूद्व मार्ग' है, जो अंग्रेजी भाषा से आया है तथा उपर्युक्त शेरों में प्रयुक्त **'जाम'** शब्दों का अर्थ 'प्याला' है, जो फारसी भाषा से आये है।

इनके अतिरिक्त एक और **जाम** शब्द हिन्दी में प्रयोग में लाया जाता है, जिसका अर्थ है पहर, तीन घण्टे का समय।

''द्वारका जाहु जू द्वारका जाहु जू आठहु **जाम** यहै झक तेरे।''

X-X-X-X-X-X-X-X-X-X-X-X-X-X

''जानि **जाम जामिनि** गई, पिय आगम अनुमानि।
झपि नैननि तिय सैन मिस बिद करी सखियानि।''

–रस सारांश

इस जाम शब्द का विकास सं०. के 'याम' से हुआ है। सं०. याम**>** जाम। पालि भाषा के काल में ही संस्कृत की 'य' ध्वनि पालि की 'ज' ध्वनि में बदल गयी थी। ''याम'' रात्रि की रखवाली या चौकीदारी को कहते थे। यह चौकीदारी या पहरेदारी तीन–तीन घण्टों के बाद बदल जाया करती थी। इसीलिए रात्रि के लिए अन्वर्थ नाम यामिनी पड़ गया। कालिदास 'यामिनी' और 'याम' का प्रयोग करते हुए लिखते हैं –

''पश्चिमाद्**यामिनी**यामात् प्रसादमिव चेतना'' (रघु0. 17/1)

ऐसे ही काज शब्द हैं। फारसी भाषा के **काज** शब्द का अर्थ है – बटन का छेद। यथा – ''दर्जी ने मेरी कमीज में छह काज बनाये हैं।'' काम, कृत्य, व्यवसाय, उद्देश्य, मतलब का अर्थ देने वाला **काज** शब्द संस्कृत के **'कार्य'** से सम्बन्ध रखता है।

काज < प्रा0. कज्ज < सं0. कार्य = कार्य, कृत्य।

''तरुवर फल नहिं खात है, सरवर पियहिं न पान।
कहि रहीम पर काज हित, संपति सँचहि, सुजान।।''

– रहीम

'नापे दो **गज** फाड़े एक **गज**' मुहावरे में आये **गज** शब्द का अर्थ एवं निम्न पंक्तियों में आये **गज** शब्द का अर्थ भिन्न–भिन्न है–

''दो पद्म शुण्डों में लिये, दो खुण्ड वाला गज कहीं,
मर्दन करें उनको परस्पर, तो मिले उपमा कहीं।''

इसका कारण इन शब्दों के मूल का पृथक्–पृथक् होना है। मुहावरे में प्रयुक्त **गज** शब्द की जननी फारसी भाषा है। फारसी में **गज** शब्द लम्बाई की नाप का द्योतक है। 16 गिरह या तीन फुट की एक नाप को गज कहा जाता है। दूसरी पंक्ति में प्रयुक्त गज शब्द का उत्स है – संस्कृत भाषा। जहाँ **गज** शब्द का अर्थ है – हाथी।

मधुर अर्थ का वाचक शब्द **कल** तथा समय अर्थवाची **कल** शब्द दो भिन्न–भिन्न परम्पराओं से आये हैं। पहले कल शब्द का स्रोत संस्कृत भाशा है –

''अविचल पल, जल का छल–छल
गिरि पर गिर–गिरकर कल–कल स्वर।''

– रामकुमार वर्मा

समयवाचक **कल** शब्द अरबी भाषा की कोख से जन्मा है–

''तेरह वर्ष व्यतीत हो चुके,
पर है मानो **कल** की बात।
बन को आते देख हमें जब
आर्त, अचेत हुए थे तात।।''
साकेत – मैथिलीशरण गुप्त

भिन्नार्थक किन्तु ध्वनि–साम्य रखनेवाले कुछ शब्द ऐसे भी होते हैं जिनका उद्‌गम पृथक्–पृथक् भाषाओं से न होकर एक ही भाषा के पृथक्–पृथक् शब्दों से हुआ है। जैसे हिन्दी में एक शब्द है– **घट**। हिन्दी में **घट** शब्द के दो रूपों में प्रचलित है–

1. संज्ञारूप में,

''बीती विभावरी जाग री।
अम्बर–पन**घट** में डुबो रही।
तारा–घट ऊषा नागरी।''
लहर – जयशंकर प्रसाद

2. क्रिया रूप में, यथा –

''मोहन का वजन दिन–प्रतिदिन **घट** रहा है।''

ये दो घट शब्द समान ध्वनि–समश्टिवाले भिन्नार्थक शब्द हैं। वस्तुतः दोनों **घट** शब्द एक ही भाषा के पृथक्–पृथक् शब्दों से व्युत्पन्न हैं। प्रथम संज्ञा **घट** शब्द का अर्थ 'घड़ा' है, जो सं०. भाषा से आया है – सं०. घट = घड़ा। घट < प्रा0. घडग < सं०. घट।

द्वितीय क्रियावाचक **घट** शब्द का अर्थ 'कम' या 'क्षीण होना होना' है। सं०. घृष्ट (घृष) > प्रा0. घट्टइ > हि०. घट।

लाजपतराय तथा **बागपत** शब्दों में प्रयुक्त **'पत'** सं०. के दो भिन्न–भिन्न शब्दों का विकसित रूप है। लाजपतराय के 'पत' शब्द का विकास सं०. के 'पति' शब्द से हुआ है। संस्कृत **पात्य > पति, पत**। जबकि बागपत के 'पत' शब्द का विकास संस्कृत के प्रस्थ शब्द से हुआ है। संस्कृत **वृकप्रस्थ > बागपत**। 'पत' शब्दों के इन मूल शब्दों को व्युत्पत्तिशास्त्री डा0. अम्बाप्रसाद 'सुमन' जी की शब्दार्थान्वेशी दृश्टि खोज लायी है। अपने ग्रन्थ 'शब्द ब्रह्म की ज्योति' में 'सुमन' जी लिखते हैं – 'संस्कृत भाषा **'पति'** शब्द हिन्दी की बोलियों में आकर **पत** हो गया। जैसे – **लाजपतराय, धनपतराय** आदि में (सं०. पति **>** पत)।

संस्कष्त भाषा का **'प्रस्थ'** शब्द भी 'पत' हो गया। श्रीकृष्ण ने दुर्योधन से पाण्डवों की इच्छा के अनुसार पाँच ग्राम माँगे थे – **1. इन्द्रप्रस्थ, 2. वृकप्रस्थ, 3. मालन्दी, 4. वारणावत**, 5. कोई भी एक गाँव, जिसे कौरव देना चाहे।

सं०. **वृकप्रस्थ** > बागपत। सं0. **पाणिप्रस्थ** > पानीपत। यहाँ तक कि संस्कृत पत्र शब्द का विकास भी पात में होता है।

शब्दों की माया भी विचित्र है। किसी शब्द के पूर्व रूप का पता लगाना सुगम नहीं है।

''प्रस्थ' में ध्वनियों का जो गुच्छीय और संयुक्त रूप है, वह हिन्दी को स्वीकार नहीं। इसीलिए 'स्थ' कोमल रूप में 'त' हो गया।''[5]

समान ध्वनिवाले किन्तु भिन्नार्थक शब्दों के अर्थ का बोध व्युत्पत्ति ही कराती है। यथा – त्+अ+न्+अ ध्वनियों वाले **'तन'** दो शब्द हैं। एक **तन** शब्द का अर्थ 'ओर, तरफ' है तथा दूसरे **तन** शब्द का अर्थ 'शरीर' है। व्युत्पत्ति से ही जाना जा सकता है कि 'ओर, तरफ अर्थवाची **तन** शब्द का विकास सं०. तन (सं०. तन **>** अप० तणि **>** हि० तन) से है तथा 'शरीर' अर्थवाची **तन** शब्द का विकास सं०. तनु (सं०. तनु **>** प्रा०. तणु **>** हि० तन) से है।

समान ध्वनि समष्टि वाले ही **कुल** शब्द भी है। 'वंश' या 'खानदान' अर्थ का वाचक कुल शब्द संस्कृत भाषा का है। 'तमाम' या 'सब' अर्थवाची कुल शब्द अरबी फारसी का है।

हिन्दी भाषा में **'पौन'** शब्द दो अर्थों में प्रयुक्त होता है। एक पौन शब्द का अर्थ है – 'पवन'।

मेरे जानि पौनो सीरी ठौर कौ पकरि कौनो
घरी एक बैठि कहूँ धामैं बितवति है।

– सेनापति

इस 'पवन' अर्थवाची **पौन** शब्द का विकास इस प्रकार है – **सं०. पवन>प्रा०. पउन >पौन**।

दूसरा **पौन** शब्द 'तीन–चौथाई' (3/4) के अर्थ में प्रयुक्त होता है जैसे– **पौन** किलो दूध। यह **पौन** शब्द संस्कृत भाषा के **पादोन** शब्द से व्युत्पन्न है। **सं०. पादोन > प्रा०. पाउण > पाउन > पौन।**

'भोर' शब्द भी इसी श्रेणी का है। एक **'भोर'** का अर्थ है– प्रातः काल तो दूसरे **'भोर'** का अर्थ है– भूल या भ्रम।

भोर ते साँझ लौ कानन ओर निहारति बावरी नेकु न हारति।
साँझ ते **भोर** लौ तारनि ताकिबो तारनि सौं इकतार न टारति।

– घनानन्द

उपर्युक्त पंक्तियों में **भोर** का अर्थ है – प्रातः काल। यह भोर संस्कृत के भावर शब्द से विकसित है – सं०. भावर **>** भाउर **>** भउर **>** भोर।

बिसरि गयेउ मोहि **भोर** सुभाऊ (अयो०. 28/2, रामचरितमानस)।

उक्त पंक्ति में 'भोर' भूल का वाचक है। यह संस्कृत के 'भ्रम' शब्द से व्युत्पन्न है– **सं०. भ्रम > भरम > भमर > भँवर > भउँर > भउर > भोर**।

वस्तुतः ध्वनि ज्ञान होने पर ही शब्द की अर्थावगति (अर्थ का अवगत होना) होती है। अर्थ ही शब्द की वास्तविक पहचान है। शब्द के मूल को जानकर ही अर्थ तक पहुँचा जा सकता है।

उपर्युक्त शब्दों की कहानी से स्पष्ट होता है कि शब्द के मूल तक पहुँचने के लिए, उसकी अर्थावगति के लिए ध्वनि ज्ञान अपेक्षित है। ध्वनि–विज्ञान के अर्न्तगत विवेचित ध्वनि–परिवर्तन सम्बन्धी नियमों के सम्यक् अध्ययन के बिना यह नहीं जाना जा सकता कि कौन–सी ध्वनि संस्कृत से प्राकृत, अपभ्रंश या हिन्दी में किस प्रकार परिवर्तित हुई। ध्वनियों के तुलनात्मक अध्ययन से ही ध्वनि–साम्य रखने वाले भिन्न–भिन्न भाषाओं के शब्दों के मूल का ज्ञान होता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. शब्द ब्रह्म की ज्योति–डा०. अम्बाप्रसाद 'सुमन', वासन्ती प्रकाशन, सहारनपुर, सन् 1990 ई०., पृ०. 51
2. भाषा और संस्कृति– डा०. भोलानाथ तिवारी, प्रभात प्रकाशन, चावड़ी बाजार, दिल्ली, प्रथम संस्करण, सन् 1984 ई०., पृ०. 68
3. शब्दों का व्युत्पत्तिमूलक भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, रणजीत शर्मा शास्त्री, लक्ष्मीनारायण, सस्ता साहित्य भण्डार, दिल्ली, सन् 1971 ई०., पृ०. 10
4. शब्दश्री – डा० कैलाशचन्द्र भाटिया, प्रभात प्रकाशन, चावड़ी बाजार, दिल्ली, प्रथम संस्करण, सन् 1984 ई०, पृ०. 41
5. शब्द ब्रह्म की ज्योति– डा० अम्बाप्रसाद सुमन, वासन्ती प्रकाशन, सहारनपुर, सन् 1990 ई०., पृ०. 48–49
6. अन्य–

i. साकेत–मैथिलीशरण गुप्त
ii. रामचरितमानस– तुलसीदास
iii. लहर– जयशंकर प्रसाद